International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि

शिवाली मेहता[1], डॉक्टर (प्रोफेसर) राजबाला[2]

[1]शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।
[2]शोध निर्देशिका, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।

सारांश:

साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध है। साहित्यकार अपने युग परिवेश से प्रभावित होते हुए अपने साहित्य की रचना करता है। समकालीन लेखिकाओं ने नारीवादी दृष्टि अपनाते हुए अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री जीवन के संघर्षों को वाणी प्रदान की। नारीवादी विचारधारा स्त्री पुरुष समानता की पक्षधर है। इसका मूल उद्देश्य स्त्री की मानवीय गरिमा को स्थापित करते हुए उस सामाजिक संरचना का विरोध करना है जिसमें स्त्री को हाशिए पर रखा गया। नारीवादी साहित्य के अंतर्गत स्त्री और पुरुष के बीच व्याप्त असमानता का विरोध करते हुए लैंगिक समता पर बल दिया जाता है। समकालीन लेखिकाओं जैसे प्रभा खेतान, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, मधु कांकरिया, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा आदि ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री जीवन के विविध पक्षों को उद्घाटित करते हुए उनके संघर्षों, पीड़ा, मानसिक द्वंद्व, शोषण और उत्पीड़न को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।

मूल शब्द: नारीवाद, संघर्ष, उत्पीड़न, मानसिक द्वंद्व, लैंगिक समानता, सशक्तिकरण।

नारीवाद एक ऐसा आंदोलन है जो स्त्री और पुरुष के बीच समानता पर जोर देते हुए जीवन के सभी क्षेत्रों (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शिक्षा और रोजगार) में स्त्री को भी पुरुषों के समान अधिकार और अवसर प्रदान करने की मांग करता है। प्रभा खेतान के अनुसार "नारीवाद स्वीकारता है कि हर स्त्री को सत्ता से न्याय मिलना चाहिए। अभिव्यक्ति, जीवन और चुनाव की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। स्त्री नागरिक के प्रति समाज की जिम्मेदारी भी यही है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी स्त्री की यही मांग रही है।"1 इस प्रकार नारीवाद का मूल उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है, जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों की समान भागीदारी हो। स्त्री की भी पुरुषों के समान समानता, स्वतंत्रता और न्याय तक पहुंच हो। नारीवाद मूल रूप से लैंगिक समानता का पक्षधर है।

हिंदी साहित्य में नारीवाद उस लेखन से संबंधित है। जिसमें स्त्री की समस्याओं, पीड़ा, आत्म संघर्ष, घुटन,व्यथा पर प्रकाश डालते हुए उनके लिए पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शिक्षा और रोजगार में समान अधिकार और अवसर का समर्थन किया जाता है। नारीवादी विचारधारा पुरुषों का विरोध नहीं करती बल्कि उस सामाजिक

संरचना का विरोध करती है, जिसमें पुरुष को मुख्य और स्त्री को हीन समझा जाता है। इसके अंतर्गत नारी और पुरुष के बीच व्याप्त असमानता का विरोध करते हुए लैंगिक समता पर बल दिया जाता है। प्रभा खेतान नारीवाद के विषय में लिखती हैं "नारीवाद का संबंध स्त्री के अनुभव और उसकी स्थिति से है। इसे कुछ शब्दों में परिभाषित करना कठिन है। क्योंकि स्त्री को ऐसे बहुत से मुद्दों का सामना करना पड़ता है जो प्रत्यक्ष रूप से नारीवाद न भी लगें लेकिन परोक्षतः नारी मुक्ति से उनका संबंध होता है।"2 हिंदी साहित्य में नारीवादी लेखन ने समाज में स्त्री की स्वतंत्रता, समानता, अस्तित्व और अधिकार पर बल दिया है। समकालीन लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में नारीवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए स्त्रियों की पीड़ा, व्यथा, मानसिक द्वंद्व, घुटन, शोषण और उत्पीड़न को अभिव्यक्त किया है। स्त्री के मानसिक और शारीरिक शोषण पर भी प्रकाश डाला है। एक स्त्री को अपने जीवन में किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है इसको भी बखूबी अभिव्यक्त किया है। रेखा कस्तवार जी के अनुसार "स्त्रीवादी लेखन का प्रमुख नारा है पर्सनल इज़ पोलिटिकल। यह नारा स्त्री के संघर्षों, व्यक्तिगत अनुभवों और सत्य का खुलासा स्त्री की जुबानी करने का पक्षधर है। ताकि उनकी त्रासद स्थिति का बोध समाज को हो सके।"3

पुरुष साहित्यकारों ने भी स्त्री की पीड़ा और घुटन को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। किंतु स्त्री रचनाकारों ने इसे अधिक वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया है। क्योंकि सहानुभूति और स्वानुभूति में अंतर होता है। महादेवी वर्मा के शब्दों में "पुरुष के द्वारा नारी का चरित्र अधिक आदर्श बन सकता है। परंतु अधिक सत्य नहीं, विकृति के अधिक निकट पहुंच सकता है, परंतु यथार्थ के अधिक समीप नहीं। पुरुष के लिए नारीत्व अनुमान है, परंतु नारी के लिए अनुभव। अतः अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह हमें दे सकेगी वैसा पुरुष बहुत साधना के उपरांत भी शायद ही दे सके।"4

उपन्यास हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। जिसके माध्यम से स्त्री जीवन के संघर्षों, शोषण, उत्पीड़न को अभिव्यक्त किया गया है। समकालीन लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों के माध्यम से उस सामाजिक संरचना पर प्रकाश डाला है, जिसमें स्त्री को हमेशा ही दोयम दर्जा दिया गया। नारीवादी लेखन ने उस सामाजिक संरचना का विरोध किया है, जिसमें स्त्री को पुरुषों से हीन समझा जाता है। स्त्री-पुरुष के लिए दोहरे मापदंड अपनाए जाते हैं। लैंगिक आधार पर कार्य का विभाजन करके स्त्रियों को पारंपरिक भूमिका में बांध दिया जाता है। उन्हें केवल घरेलू कार्य तक, घर की चार दिवारी तक सीमित कर दिया जाता है। पितृसत्तात्मक प्रणाली की जड़ें इतनी व्यापक और गहरी हैं कि आज भी स्त्री पुरुष के बीच असमानता को साफ देखा जा सकता है। परिवार और समाज के सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार पुरुषों को दिया जाता है। मृणाल पांडे ने इस असंतुलन पर प्रकाश डालते हुए लिखा है "दुनिया में पुरुष और स्त्री के बीच का संतुलन बहुत बिगड़ा हुआ है। स्त्री का पलड़ा जिम्मेदारियों के बोझ से नीचे झुका दिया गया है, जबकि पुरुष का पलड़ा सत्ता की ताकत से बराबर ऊपर रखा गया है।"5

उषा प्रियंवदा हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। 'पचपन खंभे लाल दीवारें' इनका प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास में सुषमा के माध्यम से आधुनिक कामकाजी, अविवाहित नारी की पीड़ा, घुटन, अकेलेपन पर प्रकाश डाला

गया है। सुषमा अपने घर की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण विवाह नहीं करती ।परिवार के प्रति अपने दायित्व की पूर्ति में लगी रहती है। नील नामक युवक सुषमा को प्रेम करता है। सुषमा भी उसे पसंद करती है। किंतु अपनी पारिवारिक ज़िम्मेदारियों के चलते हुए उसके प्रस्ताव को भी मना कर देती है "मेरी बहुत जिम्मेदारियां हैं। तुमसे तो कुछ भी छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीड़ित बाबू, दो बहनें और भाई सब मुझे करना है।..."6

'छिन्नमस्ता' प्रभा खेतान का महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास की मुख्य पात्र प्रिया है। इस उपन्यास के माध्यम से इस विषय पर प्रकाश डाला गया है कि व्यवसाय या नौकरी करने से स्त्री केवल आर्थिक रूप से सशक्त नहीं होती, बल्कि इससे समाज में उनकी अपनी पहचान बनती है। प्रिया इस विषय में नरेंद्र से कहती है "नरेंद्र, मैं व्यवसाय रुपए के लिए नहीं कर रही। हाँ, चार साल पहले जब मैंने पहले- पहल काम शुरू किया था, मुझे रूपयों की भी जरूरत थी। पर आज मेरा व्यवसाय मेरी आइडेंटिटी है। यह आए दिन की विदेशों की उड़ान..... यह मेरी जिंदगी के कैनवास को बड़ा करती है। नित्य नए लोगों से मिलना- जुलना, जीवन के कार्य जगत को समझना। मुझे जिंदगी उद्देश्य हीन नहीं लगती।"7 आर्थिक सशक्तिकरण महिलाओं के व्यक्तित्व विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स्त्री पुरुष के बीच व्याप्त असमानता की खाई इतनी गहरी है कि स्त्री को मनुष्य के रूप में भी स्वीकार नहीं किया जाता। 'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास में प्रभा खेतान ने इस कटु यथार्थ पर प्रकाश डाला है। कैथी प्रभा से कहती है "प्रभा, औरत अभी मनुष्य श्रेणी में नहीं गिनी जाती और तुम अमीर- गरीब का सवाल उठा रही हो ? माय स्वीटहार्ट। हम सब अर्ध मानव हैं। पहले व्यक्ति तो बनो, उसके बाद बात करना।"8 नारीवादी लेखन का मूल उद्देश्य स्त्रियों की मानवीय गरिमा को स्थापित करना है।

'एक जमीन अपनी' चित्रा मुद्गल का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में चित्रा मुद्गल जी ने अंकिता और नीता के माध्यम से कामकाजी स्त्रियों के जीवन के संघर्षों को उद्घाटित किया है। अंकिता के माध्यम से समाज की उन रूढ़ियों और जड़ मानसिकता पर प्रहार किया गया जो स्त्रियों को हमेशा पुरुषों से निम्न स्तर पर देखना चाहती है। अंकिता अपने पति सुधांशु से कहती है "सुधांशु जी, औरत बोनसाई का पौधा नहीं जब जी चाहा, उसकी जड़ें काट कर उसे वापस गमले में रोप लिया, वह बौना बनाए रखने की इन साजिश को अस्वीकार भी कर सकती है।" 9

सूरजमुखी अंधेरे के कृष्णा सोबती का प्रमुख उपन्यास है। इस उपन्यास की मुख्य पात्र रत्ती है। अरविंद जैन ने इस उपन्यास के विषय में लिखा है "**सूरजमुखी अंधेरे के** मुख्य पात्र रत्ती के बचपन से बलात्कार की कहानी है। जिसमें रत्ती एक लंबी लड़ाई लड़ती है, हारती है, पर हार मानती नहीं। हर बार सिर उठा आगे बढ़ती है। रत्ती के लिए भविष्य वह अंधी आँखों वाला वक्त बना रहा जिससे रत्ती ने कभी साक्षात्कार नहीं किया, मगर रत्ती का 'बार-बार सर उठा आगे बढ़ना.....देखना' ही रत्ती की ताकत है..... हिम्मत है।"10 इस उपन्यास में समाज की उस रुग्ण मानसिकता पर प्रकाश डाला गया है जिसमें बलात्कार पीड़िता के चरित्र पर ही सवाल उठाए जाते हैं।

'यामिनी कथा' उपन्यास की लेखिका सूर्यबाला हैं। अपने इस उपन्यास में यामिनी के माध्यम से लेखिका ने नारी मन की पीड़ा और मानसिक द्वंद्व को व्यक्त किया है। "इस उपन्यास में सूर्य बाला जी ने आधुनिक नारी के जीवन की कभी

न खत्म होने वाली मानसिक त्रासदी को बड़े ही भावात्मक रूप में अभिव्यक्ति प्रदान की है। यह सूर्यबाला जी का प्रमुख उपन्यास है। यामिनी उपन्यास की नायिका है, वह एक अत्यंत संवेदनशील नारी है। इस उपन्यास में वह एक पत्नी एवं माँ के रूप में विभक्त हो जाती है। यामिनी संत्रास, भय, कुंठा, तनाव और घुटन भरी जिंदगी को व्यतीत करते हुए तीन पुरुषों का आश्रय पाकर भी नितांत असहाय और अकेली महसूस करती है।"11

नारीवादी साहित्य के माध्यम से स्त्री के दैनिक जीवन के संघर्षों को लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में बहुत ही प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त किया। रेखा कस्तवार जी ने नारीवादी लेखन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है "स्त्री जब स्त्री के बारे में लिखती है स्वतंत्रता, अस्मिता, समान अवसरों और अधिकारों के बारे में लिखती हैं, व्यवस्था के लिए खतरा पैदा करती है। आंतरिक और बाह्य जगत के अनुभवों को दुःसाहस के साथ लिखने वाली न केवल भारतीय वरन् समूचे विश्व साहित्य में महान लेखिकाओं का त्रासद जीवन शोध का विषय है।"12

सेज पर संस्कृत मधु कांकरिया का प्रमुख उपन्यास है। इस उपन्यास की नायिका संघमित्रा के माध्यम से कार्य स्थल पर होने वाले यौन शोषण पर प्रकाश डाला है। ऑफिस का मैनेजर, संघमित्रा के साथ अश्लील व्यवहार करता है। जिसका संघमित्रा विरोध करती है। वह उसके व्यवहार की शिकायत करते हुए कंपनी के एम. डी.से कहती है- "हाँ सर, इतनी ही सी तो बात है। एक अदना सी स्टाफ की अदना सी इज्जत। अपराध तो सिर्फ बलात्कारी और हत्यारे ही करते हैं। इन चमचमाते अफसरों की यह सूक्ष्म कमिनी हरकतें अपराध थोड़े ही हैं। ये इनका चारित्रिक पतन नहीं, हल्का-फुल्का दिल बहलाव है और हमें इसका आदी हो जाना चाहिए। इसलिए जिस अपमान ने मुझे हिला डाला, आपको एक हिचकी तक नहीं आई.....क्योंकि आधुनिकता की इस चकाचौंध ने आपको इतना मोटा देखने का अभयस्त बना डाला कि नारी स्वाभिमान और सम्मान की ये बारीक हरकतें आप लोगों को दिखलाई ही नहीं पड़ती। पर यदि मेरी जगह आपकी बेटी होती..... तो भी क्या....."।13 आज स्त्री अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई है। वह अपने विरुद्ध होने वाले गलत व्यवहार का विरोध करना भी जानती है। किंतु आवश्यकता तो इस बात की है कि उनके प्रति ऐसा व्यवहार हो ही न। संघमित्रा द्वारा विरोध दर्ज कराने पर मिस्टर मेहता, संघमित्रा से माफी मांगता है। मधु कांकरिया जी ने 'सलाम आखिरी' उपन्यास में वेश्यावृत्ति की समस्या को उठाया है।

मैत्रेयी पुष्पा द्वारा रचित त्रिया हठ उपन्यास में मीरा के माध्यम से शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। शिक्षा के माध्यम से स्त्रियों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ती है और वे सही गलत का निर्णय कर पाती हैं। इस उपन्यास में मीरा कहती है "मुझे हंसी आ जाती। पिता, भाई होकर आप लोग शादी से ज्यादा कुछ नहीं करना चाहते तो विवाह के बंधन में बांध ले जाएगा, वह छूट क्यों देगा? पिता, भाई, कका, ताऊ इस सच्चाई को खूब समझते थे और यह सच्चाई ही उनकी परंपरा की अगली कड़ी के रूप में चलती थी। शादी और शिक्षा की जंग चलती जिसमें शिक्षित लड़की को हारना होता। मैं सोचती, उर्वशी जैसी लड़कियां कितनी सुखी हैं, शिक्षा के रास्ते ही नहीं जान दी। अब उन्हें ले जाया जाए, जाने को तैयार हो जाएंगी। विरोध किस आधार पर करेंगी ? मलाल भी नहीं रहेगा। यहाँ तो सदियों से चली आ रही स्थितियों से उल्टी हवा की तरह लड़ने का इरादा उठने लगता है कहीं चुपचाप।"14 शिक्षा ही वह माध्यम है जिसे

स्त्रियों की स्थिति को बदला जा सकता है।

एक पत्नी के नोट्स ममता कालिया का एक प्रमुख उपन्यास है। जिसमें संदीप और कविता (पति-पत्नी) प्रमुख पात्र हैं। संदीप किसी न किसी बात को लेकर अपनी पत्नी को अपमानित करता है। कविता भी संदीप के व्यवहार को समझ नहीं पाती। "एक शाम वे बिल्कुल रिलेक्सड बरामदे में बैठे थे। संदीप का तीसरा पैग चल रहा था। जबकि कविता ने जिन का पहला पैग शुरू भर किया था। यकायक फोन की घंटी बजी। संदीप ने फोन उठाया हैलो, हैलो। संदीप का चेहरा ऐंठ गया।

"कौन था?" कविता ने पूछा। "पता नहीं कौन था, मेरी आवाज सुनते ही उसने फोन काट दिया" "गलत नंबर होगा।"

"उसने नंबर नहीं बताया तो गलत नंबर का उसे कैसे पता चला ? कौन हो सकता है ?" कविता मौन रही।

यकायक संदीप उसके पास आया और बाल झिंझोड़कर चिल्लाया "बताती क्यों नहीं कौन था फोन पर ? विरोध में कविता का स्वर तीखा नहीं भर्राया हुआ हो गया था। उसने संदीप को परे धकेला, "मुझे क्या पता! मुझे क्यों पूछते हो।"

"जरूर तुम्हारा कोई दोस्त होगा ! मेरी आवाज सुनते ही उसने फोन पटक दिया।"

"तुम मुझसे ऐसा बर्ताव नहीं कर सकते।" कविता ने कहा लानत है तुम पर। सब जानते हैं शहर में टेलीफोनों की क्या हालत है। काबा मिलाओ तो काशी मिल जाता है।"

"फिजूल बकवास मत करो। आज मैं जल्दी आ गया हूं तो तुम पकड़ी गई। किससे चल रहा है इश्क आजकल।"15

आज भले ही स्त्रियाँ सभी क्षेत्रों में पुरुषों के समान कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हों, किंतु घर में पुरुष आज भी स्त्री को अपने से निम्न स्थान पर ही देखना चाहता है। संदीप के ऐसे अमानवीय व्यवहार को देखकर कविता कई बार सोचती है कि वह घर छोड़कर चली जाए किंतु वह चाहकर भी ऐसा नहीं कर पाती।

इस प्रकार समकालीन लेखिकाओं ने अपने स्त्री पात्रों के माध्यम से एक स्त्री के दैनिक जीवन के संघर्षों, मानसिक व्यथा, पीड़ा, घुटन और शोषण को अभिव्यक्त किया है। प्रभा खेतान ने स्त्री लेखन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है "स्त्री लेखन का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य स्त्री की विभिन्न भूमिकाओं का मानव समाज को परिचय देना है। जीवन के उन अंधेरे कोनों पर प्रकाश डालना है जिसकी पीड़ा स्त्रियों ने सदियों से झेली है। मानवीय गरिमा और अधिकार को समझ कर संरचनात्मक, सांस्कृतिक तथा मानवीय दृष्टिकोण के मूल तत्वों का विश्लेषण करें।"16 साहित्य में नारीवादी दृष्टि ने नारी के शोषण और उत्पीड़न पर प्रकाश डालते हुए सामाजिक संरचना में परिवर्तन की मांग की है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. खेतान प्रभा, उपनिवेश में स्त्री राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ 58
2. पूर्ववत्त पृष्ठ क्रमांक 100
3. कस्तवार रेखा, स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ कवर पेज

4. वर्मा महादेवी, श्रृंखला की कड़ियां, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृष्ठ क्रमांक 63
5. पांडे मृणाल, स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक 84
6. प्रियंवदा उषा, पचपन खंभे लाल दीवारें, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक 104
7. खेतान प्रभा, छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2009, पृष्ठ क्रमांक 10
8. खेतान प्रभाव आओ पेपे घर चलें, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021, पृष्ठ क्रमांक 105
9. मुद्गल चित्रा ,एक जमीन अपनी, सामयिक प्रकाशन, 2016, पृष्ठ क्रमांक 235
10. जैन अरविंद, औरत: अस्तित्व और अस्मिता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021, पृष्ठ क्रमांक 29
11. धारबा रत्नमाला, सूर्यबाला के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2014, पृष्ठ क्रमांक 15
12. कस्तवार रेखा, स्त्री चिंतन की चुनौतियां, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ-कवर पेज
13. कांकरिया मधु, सेज पर संस्कृत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ क्रमांक 159
14. पुष्पा मैत्रेयी, त्रियाहठ, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ क्रमांक 29
15. कालिया ममता, तीन लघु उपन्यास, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ क्रमांक 39-40
16. खेतान प्रभा, उपनिवेश में स्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ क्रमांक 51